. एखनहुँ गामे
****

जँ कि आँखिमे पानि बचल छै
तयँ ने एखनो गाम अचल छै
कतबो ईर्ष्या - द्वेष रचल छै
फाँट, डाँट-फटकार मचल छै
तैयो से अनुराग पचल छै
सामाजिक सद्भाव गचल छै
जे मणि युगसँ जड़ल खचल छै
तकर चमक एखनो अविचल छै।

नगरक तँ सभ-किछु चंचल छै
सभ छलछल छै,बस हलचल छै
साधन पाबि नगर उछलल छै
गाम साधना - बल निरमल छै
एतय कमल जल,बस दलदल छै
ओतय सरोवर कमल भरल छै
तयँ तँ एखनो गाम अचल छै
जँ कि आँखिमे पानि बचल छै।।